दृष्टि The Vision

हिन्दी साहित्य

HINDI LITERATURE

टेस्ट-II (प्रश्नपत्र-2)

DTVF/18(JS)-HL-**HL2**

निर्धारित समय: तीन घंटे *Time allowed: Three Hours*	*अधिकतम अंक: 250* *Maximum Marks: 250*

नाम (Name): Ravi Kumar Sihag

क्या आप इस बार मुख्य परीक्षा दे रहे हैं? | हाँ | ✓ | नहीं | |

मोबाइल नं. (Mobile No.): _____

ई-मेल पता (E-mail address): _____

टेस्ट नं. एवं दिनांक (Test No. & Date): 02 | 09 | 07 | 2018

रोल नं. [यू.पी.एस.सी. (प्रा.) परीक्षा-2018] [Roll.No. UPSC (Pre) Exam-2018]:

1	1	3	9	4	7	9

विद्यार्थी के हस्ताक्षर (Student's Signature): Ravi Shg

Question Paper Specific Instructions

Please read each of the following instruction carefully before attempting questions:

*There are **EIGHT** questions divided in **TWO SECTIONS.***

*Candidate has to attempt **FIVE** questions in all.*

*Questions no. 1 and 5 are compulsory and out of the remaining, any **THREE** are to be attempted choosing at least **ONE** question from each section.*

The number of marks carried by a question/part is indicated against it.

*Answer must be written in **HINDI** (Devanagari Script).*

Answers must be written in the medium authorized in the Admission Certificate which must be stated clearly

Word limit in questions, wherever specified, should be adhered to.

Attempts of questions shall be counted in sequential order. Unless struck off, attempt of a question shall be counted even if attempted partly. Any page or portion of the page left blank in the Question-cum-Answer Booklet must be clearly struck off.

कुल प्राप्तांक (Total Marks Obtained): _____ टिप्पणी (Remarks): _____

मूल्यांकनकर्त्ता (कोड तथा हस्ताक्षर)
Evaluator (Code & Signatures)

पुनरीक्षणकर्त्ता (कोड तथा हस्ताक्षर)
Reviewer (Code & Signatures)

मूल्यांकन की पद्धति

प्रिय अभ्यर्थियों,

आपकी उत्तर-पुस्तिकाओं का मूल्यांकन करते हुए परीक्षक-समूह के सदस्य निम्नलिखित निर्देशों का ध्यान रखते हैं। आप भी इन्हें ध्यान से पढ़ें ताकि आप अपने प्राप्तांकों का तार्किक कारण समझ सकें।

परीक्षकों के लिये निर्देश

1. मूल्यांकन में अंकों का वही स्तर रखा जाना चाहिये जैसा संघ लोक सेवा आयोग (UPSC) के परीक्षकों द्वारा रखा जाता है।
2. सामान्य अध्ययन का जो उत्तर हर दृष्टिकोण से सटीक व उत्कृष्ट है; उसे अधिकतम 60% अंक दिये जाने चाहियें क्योंकि आयोग द्वारा किये जाने वाले मूल्यांकन में भी इससे अधिक अंक मिलना लगभग असंभव है। वैकल्पिक विषयों के उत्कृष्ट उत्तरों तथा श्रेष्ठतम निबंधों में अधिकतम 70% तक अंक दिये जा सकते है।
3. कृपया अंकों का वितरण निम्नलिखित तालिका के अनुसार करें-

उत्तर का स्तर (Standards of Answer)	सामान्य अध्ययन में अंक-स्तर (Marks Standard G.S.)	वैकल्पिक विषय तथा निबंध में अंक-स्तर (Marks Standard - Optional Subject and Essay)
उत्कृष्ट (Excellent)	51-60%	61-70%
बहुत अच्छा (Very Good)	41-50%	51-60%
अच्छा (Good)	31-40%	41-50%
औसत (Average)	21-30%	31-40%
कमज़ोर (Poor)	0-20%	0-30%

4. कृपया उत्तर में निम्नलिखित गुणों को विशेष प्रोत्साहन दें-
   - प्रश्न की सटीक समझ व उत्तर की व्यवस्थित रूपरेखा
   - संक्षिप्त, टू-द-पॉइंट लेखन शैली
   - प्रामाणिक तथ्यों का समुचित उपयोग
   - अधिकतम ज़रूरी बिंदुओं का समावेश
   - सरकारी दस्तावेज़ों (मंत्रालयों/आयोगों की रिपोर्ट्स, पॉलिसी पेपर्स आदि) के संदर्भों की चर्चा
   - प्रभावी भूमिका व निष्कर्ष
   - समकालीन घटनाओं/प्रसंगों को उत्तर से जोड़ना
   - दृष्टिकोण में संतुलन, समावेशन व गहराई
   - अच्छी, साफ-सुथरी हैंडराइटिंग
   - भाषा में प्रवाह
   - आवश्यकतानुसार डायग्राम्स, नक्शों आदि का प्रयोग
   - तकनीकी शब्दावली का सटीक उपयोग
   - सुंदर प्रस्तुति शैली (छोटे पैराग्राफ्स रखना, महत्त्वपूर्ण शब्दों को अंडरलाइन करना आदि)
   - विराम चिह्नों का समुचित प्रयोग
   - भाषा में वर्तनी व व्याकरण की शुद्धता
5. टॉपर्स के अनुभव बताते हैं कि उत्तर की विषयवस्तु अच्छी होने पर आयोग के परीक्षक शब्द-सीमा के थोड़े बहुत उल्लंघन पर अंक नहीं काटते हैं। कृपया आप भी इसी दृष्टिकोण के अनुसार अंक-निर्धारण करें।

Method of Evaluation

Dear Candidates,

While assessing your answer-scripts, the evaluators are required to follow the given instructions. You should also read them carefully to understand the logic behind the marks obtained by you in the tests.

Instructions for the Evaluators

1. The level of marks while evaluating the answers should be kept as per UPSC (Union Public Service Commission) standards as far as possible.
2. The answers of General Studies which are accurate and excellent from every perspective should be awarded a maximum of 60% marks as it is almost impossible to get more than that in actual UPSC examination. Excellent answers in optional subjects and the best written essays can be awarded a maximum of 70% marks.
3. Please assign the marks according to the following table-

4. Please devote special attention to the following qualities in an answer–
   - Accurate understanding of the question and systematic presentation of the answer
   - Crisp and to the point writing style
   - Adequate use of authentic facts
   - Inclusion of all the important points
   - Citing of relevant facts and figures from relevant official documents (Ministries /Commissions Reports, Policy Papers etc.)
   - Effective introduction and conclusion
   - Linking of current events and situations with the answer
   - Balance and depth in answer-writing
   - Legible and clean handwriting
   - Flow of language
   - Use of diagrams, maps etc
   - Precise use of technical terminology
   - Beautiful presentation style (small paragraphs, underlining important words etc.)
   - Proper use of punctuations
   - Correct spellings and right use of grammar
5. Experience of UPSC toppers also indicates that if the content of the answer is good, the UPSC examiners do not cut the marks on slight violations of the word-limit. Please award marks strictly according to the above-mentioned instructions.

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Section–A

1. निम्नलिखित पद्यांशों की लगभग 150 शब्दों में ससंदर्भ व्याख्या कीजिये। $10 \times 5 = 50$

(क) सतगुरु लई कमाँण करि बाँहण लागा तीर।
एक जु बाह्या प्रीति सूँ भीतरि रह्या सरीर।।

संदर्भ व प्रसंग

प्रस्तुत साखी 'पं. श्यामसुंदर दास' द्वारा संकलित 'कबीर ग्रंथावली' के गुरुदेव कौ अंग नामक भाग से उद्धृत है। इस साखी में कबीर ने गुरु-ज्ञान की महिमा का वर्णन कर शिष्यों पर उसके प्रभाव की व्याख्या की है।

व्याख्या:- कबीर कहते हैं कि गुरु ने बाणों से तीरों की वर्षा अर्थात- ज्ञान की वर्षा की। इन तीरों की चोट तो बाहरी शरीर पर हुई, परन्तु यह भीतरी शरीर तक हुई अर्थात सतगुरु के ज्ञान रूपी बाणों से शिष्य का बाहरी नहीं बल्कि भीतरी भाग निर्मल व भीतरी भाग प्रेम रूपी प्रकाश से आलोकित हो गया और वह शिष्य ब्रह्म की साधना हेतु अपने प्रयासों में और भी ध्यानमग्न हो गया।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान
कुछ न लिखें।
(Please don't w
anything in this

प्रासंगिकता :- आज भी यदि गुरु का उचित ज्ञान हो तो शिष्य की सफलता संभव है - गुरु की महिमा कबीर ने अन्य दोहे में भी कही है -

"सतगुरु हमसूं रीझकर कह्या एक परसंग
बरस्या बादर प्रेम का भीज गया सब अंग"

शिल्प :- भाषा - सरल
- ज्ञान रूपी तीर - रूपक अलंकार
- अप्रस्तुत विधान दर्शनीय है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

(ख) निरखत अंक स्यामसुंदर के बार बार लावति छाती।
लोचन जल कागद मसि मिलि कै ह्वै गई स्याम स्याम की पाती।।
गोकुल बसत संग गिरिधर के कबहुँ बयारि लगी नहिं ताती।
तब की कथा कहा कहौं, ऊधो, जब हम बेनुनाद सुनि जाती।।
हरि के लाड़ गनति नहिं काहू निसिदिन सुदिन रासरसमाती।
प्राननाथ तुम कब धौं मिलोगे सूरदास प्रभु बालसँघाती।।

सन्दर्भ प्रसंग

प्रस्तुत पंक्तियाँ 'सूरदास' द्वारा रचित 'सूरसागर' के 'भ्रमरगीत' से ली गई हैं। इन पंक्तियों में सूर ने कृष्ण का पत्र प्राप्त होने पर होने वाले गोपियों की दशा का अत्यन्त मार्मिक व मनोहारी वर्णन किया है।

व्याख्या :- कृष्ण का उद्धव के माध्यम से कृष्ण की चिट्ठी प्राप्त होने पर कृष्ण के सुंदर अंकों को गोपियाँ निहारकार बार - बार अपनी छाती से लगा रही है। आँखो अश्रुधारा से चिट्ठी के भीगने के कारण चिट्ठी की स्याही घुल गई है। कृष्ण की चिट्ठी स्याम अर्थात काली हो गई। गोपियाँ उद्धव से निवेदन करती है कि कृष्ण गोकुल में कब बसेंगे और हमारे हृदय का ताप शांत होगा। ~~साथ ही उद्धव को छिड़ककर उन्हें ज्ञान रूपी संदेश देने को कहती हैं।~~ वे उद्धव से अपने पहले के दिनों की कथा कहते हुए बताती है कि जब कृष्ण

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

मुरली बजाया करते थे एवं वे अपने घरों से निकलकर बिना रूके निरंतर उनकी धुन को सुनती रहती थी और समय का भी ध्यान नहीं रहता था। वे प्रार्थना करती है कि ~~ब्रज~~ बाल्यवस्था में रहने वाले हे प्रभु! आप आप हमसे कब आकर मिलेंगे।

विशेष :- गोपियों के विरह का सुंदर वर्णन सूर ने किया है। अन्य किसी कवि के वर्णन में वियोग शृंगार का ऐसा वर्णन नहीं मिलता है
- 'ह्वै गई स्याम स्याम की पाति' में यमक अलंकार का सुंदर प्रयोग है।
- भाषा - ब्रज
- स्पर्श बिंब का सुंदर प्रयोग

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) रोई गँवाए बारह मासा । सहस सहस दुख एक एक साँसा।
तिल तिल बरख बरख परि जाई । पहर पहर जुग जुग न सेराई।।
सो नहिं आवै रूप मुरारी । जासौं पाव सोहाग सुनारी ।।
साँझ भए झुरि झुरि पथ हेरा । कोनि सो घरी करै पिउ फेरा? ।।
दहि कोइला भइ कंत सनेहा। तोला माँसु रही नहिं देहा।।
रकत न रहा, विरह तन गरा । रती रती होइ नैनन्ह ढरा।।
पाय लागि जोरै धन हाथा। जारा नेह, जुड़ावहु, नाथा ।।
बरस दिवस धनि रोई कै, हारि परी चित झंखि।
मानुष घर घर बूझि कैं, बूझै निसरी पंखि।।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(घ) शत घूर्णावर्त, तरंग-भंग उठते पहाड़,
जल राशि-राशि जल पर चढ़ता खाता पछाड़,
तोड़ता बन्ध-प्रतिसंध धरा, हो स्फीत-वक्ष
दिग्विजय-अर्थ प्रतिपल समर्थ बढ़ता समक्ष।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

प्रस्तुत पंक्तियाँ सूर्यकान्त त्रिपाठी निराला की कालविजयी लंबी कविता 'राम की शक्ति पूजा' से ली गई हैं। इन पंक्तियों में राम के अश्रु बुंदों को देखकर उनके परम भक्त हनुमान के उग्र रूप का वर्णन किया गया है।

व्याख्या:- हनुमान जब राम के चरण-कमलों में बैठकर सुंदर क्षणों में मग्न थे, तभी उन्होंने राम की चिन्तामग्न आँखों से गिरे अश्रु बुंदों को देखा। अपने स्वामी भगवान राम की यह चिंता हनुमान के लिये असहनीय थी। हनुमान ने क्रोध में आकर 'शक्ति' को परास्त करने का प्रण कर उड़ान भरी। उनके क्रोध रूपी गर्जन से चक्रवात उठने लगे, पहाड़ों की स्थिरता भी हिलने लगी अर्थात् वे भी गिरने लगे। समुद्र का जल बवंडर के रूप में अत्यन्त ऊँचाई पर उठने लगा एवं कूली हांत लिये हनुमान ने धरी

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

पृथ्वी को दोलायमान कर दिया। भावावेश में हनुमान ऐसे चले जैसे विजय रूपी आकांक्षा को जीतकर ही आयेंगे।

विशेष :- बिंबों का जबरदस्त प्रयोग किया गया है। ऐसी बिम्बक्षमता केवल बिहारी या सूर के अलावा हिंदी के किसी कवि में नहीं।

(ख) प्रसंगानुकूल तत्सम भाषा का प्रयोग

(ग) भाषा की समास क्षमता दर्शनीय है खड़ी बोली की समास क्षमता का सर्वोत्तम उदाहरण यह कविता है

(घ) हनुमान की शक्ति को हराने की ताकत रखने का प्रसंग निराला की मौलिक कल्पना है। यदि अध्यात्म रामायण से अलग है

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

(ङ) आनन्ददात्री शिक्षिका है सिद्ध कविता-कामिनी,
है जन्म से ही वह यहाँ श्रीराम की अनुगामिनी।
पर अब तुम्हारे हाथ से वह कामिनी ही रह गई,
ज्योत्स्ना गई देखो, अँधेरी यामिनी ही रह गई!

प्रस्तुत पंक्तियाँ 'मैथिलीशरणगुप्त' द्वारा रचित प्रसिद्ध कविता 'भारत-भारती' से ली गई है। राष्ट्रकवि गुप्त जी ने कविता की महत्ता बताते हुए आधुनिक युग के कवियों की केवल रसात्मक कविताएँ लिखने की प्रवृत्ति पर कटाक्ष किया है।

व्याख्या :- गुप्त जी के अनुसार कविता का मुख्य उद्देश्य व कामना जनता को शिक्षित कर उनमें उचित मूल्यों का विकास करना होता है। वह अपने जन्म से ही भगवान राम की भाँति जनता में मर्यादा-शील, ~~लोकसेवन~~ लोकमंगल का भाव जगाती है परंतु साथ ही वे आधुनिक कवियों के कर्म पर चिंता करते हुए कहते हैं कि उनकी कविताओं में केवल काम-वासना एवं शृंगार के ही चित्र बच गये हैं। समाज किस ओर जा रहा

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

ही है, इसकी उन्हें कोई चिन्ता नहीं है। उनकी कविताओं में केवल काम रूपी अंधेरा विद्यमान है और ज्ञान रूपी ज्योति लेशमात्र भी नहीं है व सिर से गायब है।

प्रासंगिकता

(क) ~~शुक्ल~~ गुप्त जी की ये पंक्तियाँ आधुनिक सतही एवं छिछली कविताओं को लिखने वाले कवियों पर भी लागू होती है जो अपने सामाजिक दायित्व नहीं समझते।

(ख) 'भारत-भारती' रचना कविता में खड़ी बोली के प्रयोग के एक महत्वपूर्ण स्तंभ के रूप में जानी जाती है।

(ग) भाषा- खड़ी बोली

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
Please do not write anything except the question number in this space)

3. (क) 'सूर के उद्धव एक प्रकार से कृष्ण (शासक) एवं गोपियों (प्रजा) के बीच बिचौलिये नेता के प्रतीक हैं। इस रूप में यह प्रतीक आज भी उतना ही प्रासंगिक है।' क्या आप इस मत से सहमत हैं? अपना अभिमत सोदाहरण स्पष्ट करें। 20

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

किसी भी कविता की महत्ता का मूल्यांकन इस बात से भी होता है कि वह अपने काल का कितना अतिक्रमण कर पाती है। चाहे 'राम की शक्ति पूजा' हो या प्रसाद की 'कामायनी' दोनों का महत्व अपने कालखंड का अतिक्रमण कर वर्तमान में प्रासंगिकता बनाये रखने में भी है। महान रचनाओं के समय के साथ-साथ अर्थ में भी नयापन आ ही जाता है।

यदि 'सूरसागर' के भ्रमरगीत अंश का वर्तमान सन्दर्भ में विश्लेषण करें तो हम पाते हैं कि यह रचना वर्तमान राजनीति के प्रसंगों पर भी नया अर्थ प्रदान करती है। आज के प्रतिनिधि लोकतंत्र में जहाँ चुनावों के समय में बड़े-बड़े नेता जनता से लोकलुभावन वादे कर सत्ता में पहुँच जाते हैं, वहीं चुनाव जीतने के बाद जनता की समस्याओं की सुध उन्हें नहीं रहती। अन्ततः पुनः चुनाव के समय जनता के असंतोष के शमन हेतु अपने किसी कनिष्ठ

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कार्यकर्त्ता को भेजते हैं। यह कार्यकर्त्ता या बिचौलिया जनता की समस्याओं के 'निकासगृह' की भांति कार्य करता है।

इसी सन्दर्भ में उद्धव को देखने पर वह 'बिचौलिया' नज़र आता है तो कृष्ण 'नेता'। कृष्ण मथुरा के राजा बनने पर वापिस ब्रज नहीं जा पाते हैं और गोपियों की पीड़ा सुनने के लिये उद्धव को भेज देते हैं। उद्धव के द्वारा ज्ञान-मार्ग का पाठ-पढ़ाना भी एक अर्थ में जनता के असंतोषों (गोपियों के) का उचित निवारण न कर उन्हें परिवर्तित करना है। सूरसागर की अनेक उक्तियाँ इस सन्दर्भ में अत्यन्त सटीक बैठती हैं।

"हरि हैं राजनीति पढ़ि आए
इक अति चतुर हुते पहले ही, अकरि नेह सिखाए
जानि बुद्धि बड़ी जुवतिन की योग संदेश पठाए"

"सूरदास ऐसी क्यों निबहै
अंधधुंध सरकार"

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
Please do not write anything except the question number in this space)

परन्तु उपर्युक्त विवेचन इस समस्त वर्णन का एक ही पक्ष को संदर्भित करता है। सबसे पहली बात तो कृष्ण मथुरा में अपनी मर्जी से नहीं रुके हैं। वे तो महाराज उग्रसेन के निवेदन पर मथुरा की जरासंध से रक्षा हेतु वहाँ रुकने को विवश हैं।

दूसरी बात यह है कि कृष्ण ने उद्धव को इसलिए नहीं भेजा है कि वे गोपियों के हृदय में ज्ञान-मार्ग को स्थापित कर दें। उन्हें गोपियों के प्रेम पर संशय नहीं है। वे तो उद्धव को गोपियों के माध्यम से भावना एवं प्रेम के भक्तिमार्ग का पाठ पढ़ाना चाहते हैं। और यदि, कृष्ण के मन में गोपियों को ज्ञान-मार्ग सीखाने की मंशा होती तो फिर इस विवाद में उद्धव की हार न होने देते। गोपियों ने अपनी भावना और वाक्पटुता से उद्धव का हृदय परिवर्तन कर दिया है।

"अब अति पंगु भयो मन मेरा
गयो तहाँ निरगुन कहिवे को,
भयो सगुन को चेरो।"

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

इस प्रश्न में विद्यमान प्रतीकों की व्याख्या समकालीन राजनीति में एक हद तक की जा सकती है परन्तु इस बात से पूर्णतः ~~समर्थ~~ सहमत होना कठिन है कि कृष्णा आज के राजनीतिक नेता और उद्धव बिचौलिये की भूमिका निभा रहे हैं।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

पया इस स्थान में प्रश्न
ङ्या के अतिरिक्त कुछ
लिखें।
lease do not write
ything except the
estion number in
s space)

(ख) गोस्वामी तुलसीदास द्वारा प्रतिपादित रामराज्य की अवधारणा की समालोचना कीजिये। 15

कृपया इस स्थान में
कुछ न लिखें।
(Please don't write
anything in this space)

गोस्वामी तुलसीदास ने अपने काव्यों में राजनीतिक प्रसंगों का भी महत्वपूर्ण वर्णन किया है। चाहे 'रामचरितमानस' हो या 'कवितावली' उन्होंने राजनीतिक समस्याओं का उचित विश्लेषण कर उनका समाधान भी प्रस्तुत किया है। उनकी 'रामराज्य' की अवधारणा राजनीति के आदर्श को दर्शाता में व्यस्त करती है।

सर्वप्रथम उनकी रामराज्य की अवधारणा एकदेशीय या भूमि के एक खण्ड से जुड़ी हुई न होकर सार्वदेशिक है अर्थात् संपूर्ण पृथ्वी पर भगवान राम का राज्य चारों दिशाओं में विद्यमान है।

दूसरे उन्होंने आदर्श राज्य की विशेषता यह बतलाई है कि उस राज्य में गरीबी का अंश भी नहीं होता और हर भूखे को भोजन मिलता है। साथ ही रामराज्य में हर व्यक्ति को 'सुलभ पदारथ चारि' प्राप्त होते हैं।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

तुलसी के रामराज्य में वर्णाश्रम धर्म का पालन होता है। हर व्यक्ति अपने वर्ण के अनुसार [वर्णाश्रम धर्म रत नर नारी] अपने-अपने कर्मों में उन्मुख है।

तुलसी के रामराज्य की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि यहाँ पर राजनीति की विसंगतियाँ विद्यमान नहीं है। वह समय जब सत्ता की खातिर एक पुत्र द्वारा पिता का और भाई द्वारा भाई का वध करना आम बात थी, यह समानता का विचार क्रान्तिकारी प्रतीत होता है।

"जनमें एक संग सब भाई, भोजन सयन केलि लरिकाई
बिमल बंस यह अनुचित एकु, बंधु बिहाइ बड़ेहि अभिषेकु"

तुलसी के राम निसचरों का दमन करने वाले व ब्राह्मण जनों की सेवा करने वाले हैं-

"निसिचर हीन करौ महि, भुज उठाइ पन कीन्ह
सकल मुनिन्ह के आश्रमन, जाइ जाइ सुख दीन्ह"

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न क्रमांक के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please don't write anything except the question number in this space)

तुलसी के रामराज्य में किसी भी व्यक्ति को किसी भी प्रकार के संताप से ग्रस्त नहीं होता और सकल प्रजा सुख में जीवन-यापन करती है-

"दैहिक दैविक भौतिक तापा, रामराज्य काहुहि नहीं व्यापा"

अन्ततः तुलसी के रामराज्य में जनता के प्रति जवाबदेहिता भी व्याप्त है-

"जौ अनीति कछु भाषौं भाई, तौ
तौ मोहि बरजहु भय बिसराई"

इस प्रकार तुलसी का रामराज्य राजतंत्र होते हुए भी एक अर्थ में आदर्श प्रजातंत्र का आभास देता है। आज के लोककल्याणकारी राज्य की अवधारणा के बीज तुलसी के रामराज्य में देखे जा सकते हैं। अतः राजनीतिक आदर्श के रूप में रामराज्य की अवधारणा तुलसी का समाज को दिया गया महत्वपूर्ण उपादान है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) काव्यात्मकता की दृष्टि से कबीर की भाषा का अनुशीलन कीजिये। 15

कबीर की भाषा के सन्दर्भ में आलोचकों के बीच ज़बरदस्त विवाद है। प्राचीन काव्यशास्त्रीय प्रतिमानों पर परखने वाले आलोचकों की नज़र में यह भाषा खुरदरी व अटपटी हो सकती है परन्तु हजारी-प्रसाद द्विवेदी प्रभृति आलोचकों ने कबीर की भाषा में निहित संभावनाओं की खोज करते हुए कबीर को 'वाणी का डिक्टेटर' व 'भाषा का बादशाह' घोषित कर दिया।

कबीर की भाषा की सबसे प्रमुख विशेषता है 'प्रसंगानुकूल सटीक शब्द चयन क्षमता'। इस बात की प्रामाणिकता निम्न पंक्तियों में स्पष्ट की जा सकती है -

"कबीर कूता राम का, मुतिया मेरा नाऊँ
गले राम की जेवड़ी, जित खैंचे तित जाऊँ।"

इन पंक्तियों में निहित 'मुतिया' शब्द पर विचार करें तो आभिजात्यवादी आलोचकों को यह नाम अजीब लग सकता है, परंतु

Copyright – Drishti The Vision Foundation

द्विवेदी जी ने इस नाम की प्रशंसा करते हुए कहा है कि यह नाम है बड़ा जानदार। 'इस नाम में मानो कुत्ते की सारी निरीहता, दुम हिलाते हुए नज़र आ जाती है।'

कबीर की भाषा की दूसरे सबसे प्रमुख विशेषता है- 'व्यंग्य क्षमता'। वे सहज शब्दों में ऐसी तीखी चोट करते हैं कि सामने वाला धूल झाड़कर चल देने के अलावा और कोई उपाय नहीं पाता।

"अरे इन दोउन राह न पाई
हिंदुन की हिंदुआई देखी, तुरकन की तुरकाई"
(सांप्रदायिकता पर चोट)

'मूंड मुड़ाए हरि मिले' जैसे दोहा में हिंदु आंडबरों पर तो 'कांकर पाथर जोरी के...' में मुस्लिम आडंबरों पर चोट भी दर्शनीय है।

कबीर की भाषा के उपर्युक्त वर्णनों के साथ-साथ अन्य शिल्पगत तत्वों से भी उनकी भाषा वंचित नहीं है। 'शब्द मसि छुवौ नहिं, कलम गहि नहीं हाथ' जैसे कथनों से कबीर की शिल्पगत चमत्कारों

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

प्रति बेरुखी का पता चलता है परन्तु ~~भाषाओं~~ भाषा का सहजता से प्रयोग इसमें शिल्पगत चमत्कारों का भी निदर्शन करा देता है-

अलंकार -

"सात समद की मसि करौं, लेखनी सब बनराई"

(अतिशयोक्ति)

बिंब -

"बरस्या बादर प्रेम का, भीज गया सब अंग"

(स्पर्श बिंब)

इसके अलावा कबीर की भाषा का सर्वोत्तम रूप वहाँ मिलता है जहाँ वे अपने ईश्वर के प्रति भावनात्मक रहस्यवाद से प्रेरित प्रेम की कविताएँ लिखते हैं जैसे-

"तलफै बिन बालम मोर जिया
दिन नहीं चैन रात नहीं निंदिया
तलफ तलफ के भोर किया"

इस प्रकार भाषा में कठोरता के साथ कोमलता भी विद्यमान है। साथ ही कबीर की भाषा शिल्प के प्रति बेरुखी की हद तक लापरवाह होने के बावजूद शिल्पगत सामर्थ्य से रहित नहीं है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

4. (क) 'भ्रमरगीतसार' में सूर के विरह-वर्णन के संबंध में आचार्य रामचंद्र शुक्ल की मान्यताओं का उल्लेख करते हुए उससे अपनी तार्किक सहमति या असहमति प्रकट कीजिये। 20

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

'भ्रमरगीत सार' सूरदास के सूरसागर का सबसे सुंदर व मार्मिक अंश है जो कृष्ण के मथुरा गमन के उपरांत गोपियों के प्रवास विरह की सुंदर व्यंजना करता है। शुक्ल जी ने भी कहा है कि ''विरह के जितने प्रकार हो सकते हैं और वर्णन किया जा सकता है, सूर ने भ्रमरगीत' में खड़ा किया है।''

गौरतलब है कि काव्यशास्त्र में विरह की दस दशाएँ मानी जाती हैं इन सभी दशाओं का वर्णन सूर ने अपने काव्य में किया है-

सबसे पहले गोपियों के 'प्रलाप' का वर्णन निम्न पंक्तियों में किया जा सकता है-

- "निसि दिन बरसत नैन हमारे
सदा रहति पावस ऋतु इनमें जबतें स्यामसिधारे"

- "ऊधौ जा लागौ ग्रंथ आये
तुम देखे जनु मानव देखे तुम गय ताप नसाये"

(अभिलाषा)

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

प्रेमी को अपने प्रेमी के दूर जाने पर यह चिन्ता होती है कि कहीं उसकी किसी गलती कि वजह से तो वह रूठ नही गया है। राधा की निम्न पंक्तियाँ यही बखान करती है-

"मेरे मन इतनी सूल रही (चिन्ता)
एक दिन हरि गेह आए, मैं भी मथती दही
तिन्हें देख हौं मान करयौं, सो हरि गुस्सा गही।"

इस प्रकार काव्यशास्त्रीय प्रतिमानों पर कसने पर सूर सफल नज़र आते हैं।

इसके अलावा सूर ने कई अन्य दशाओं का भी वर्णन किया है जिनका वर्णन काव्यशास्त्र में भी नहीं मिलता। यह वर्णन तो केवल सूरदास जैसे प्रेम तत्व का सूक्ष्म द्रष्टा ही कर सकता है जैसे आत्मसमाधान (विरह में खुश रहने का प्रयास) और आत्म विस्तार (प्रेम के क्षितिज को विस्तृत कर देना)

हम तो दुहुँ भाँति फल पायो
जो ब्रजनाथ मिले तो नीको, नहिं जग जस गायो
(आत्म - समाधान)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
Please do not write anything except the question number in this space)

"जहँ-जहँ रहौ राज करौ (आत्म विलाप)
तहँ-तहँ लोहु कीरि सिर मार"

इस प्रकार इस सन्दर्भ में तो शुक्ल जी की मान्यताओं से सहमति रख सकते हैं कि सूरदास का वियोग वर्णन अपने आप में संपूर्ण व बेजोड़ है जहाँ विरह की सारी दशाएँ दिखाई पड़ जाती है।

एक दूसरे संदर्भ में शुक्ल जी ने गोपियों के विरह की तुलना 'सीता' के विरह से करते हुए कहा है कि -

"गोपियों का विरह ~~का~~ केवल विरह वर्णन के लिये ही है, परिस्थितिजन्य नहीं"

उन्होंने कहा कि जहाँ सीता हजारों कोस दूर समुद्र पार राम के विरह में राक्षसों की बीच तड़प रही थी, वहीं सूर की गोपियाँ तो कुछ कोस पर वह कृष्ण के विरह में ही जल रही है।

तार्किक रूप से देखें तो यह मत उचित प्रतीत नहीं होता। नंददुलारे वाजपेयी ने भी कहा है कि प्रेम

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

में भौगोलिक दूरी का ही नहीं, मानसिक दूरी का भी महत्व होता है। गोपियों के कृष्ण चाहे यमुना पार ही राज कर रहे हो परन्तु यदि गोपियाँ उनसे मिलने चली जाती हैं तो एक तो उनके मान को ठेस पहुँचती है दूसरे उनके प्रेम की गहराई भी कम होती है। अतः विरह के सन्दर्भ में गोपियाँ, सीता से कम नहीं है।

इस प्रकार संपूर्ण रूप में शुक्ल जी की व्याख्याओं जैसे विरह का संपूर्ण व सूक्ष्म मनोवैज्ञानिक वर्णन, गोपियों की प्रेमप्रसूत वृत्तियों की वक्रता आदि से सहमति रखी जा सकती है, परन्तु विरह की तीव्रता की तुलना सीता के विरह से करके गोपियों के विरह को कम करके आँकना उचित नहीं माना जा सकता है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

पया इस स्थान में प्रश्न
ख्या के अतिरिक्त कुछ
लिखें।
lease do not write
ything except the
estion number in
s space)

(ख) कबीर के दर्शन का स्वरूप स्पष्ट कीजिये। 15

कृपया इस स्थान में
कुछ न लिखें।
(Please don't write
anything in this space)

कबीर का व्यक्तित्व बहुआयामी है। निरक्षर, बहुश्रुत एवं अनुभूतिशील व्यक्ति होने के कारण कबीर पर अनेक दर्शनों का प्रभाव दिखलाई देता है। जो बात कबीर में सबसे अलग है कि वे किसी भी दर्शन को ज्यों का त्यों स्वीकार नहीं करते, बल्कि उसे अपने अनुभव व अनुभूति की मुहर लगाकर ही स्वीकार करते हैं।

कबीर के दर्शन पर विभिन्न दर्शनों यथा, अद्वैतवाद, नाथ परंपरा, सूफी मत, वैष्णव आदि का प्रभाव प्रमुखता दिखाई देता है।

कबीर के विचार

(क) ब्रह्म :- कबीर के एक ईश्वर को मानने के प्रति शुक्ल जी इस्लामी एकेश्वरवाद का प्रभाव मानते हैं परंतु यह मत उचित नहीं है वास्तव में उन पर शंकर के दर्शन का प्रभाव है क्यों कि शंकर की भाँति वे भी इस संसार को मिथ्या मानते हैं -

"रहना नहिं देस बिराना है,

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this sp

यह संसार कागद की पुड़िया
बूंद पड़े घुलि जाना है"

(ख) आत्मा :- आत्मा के सन्दर्भ में कबीर का विचार भी अद्वैत के निकट है। जहाँ तत्व वेदांती आत्मा को ईश्वर का अंश मानते हैं वहीं कबीर ने आत्मा व ब्रह्म को एक ही माना है, और उनके मध्य भेद का विरोध किया है।

"जल में कुंभ, कुंभ में जल, बाहर भीतर पानी
फूटा कुंभ जल जलहिं समाना, यह तथ कहै ज्ञानी"

(ग) ~~संसार~~ शरीर :- यदि आत्मा व ब्रह्म एक ही है तो इस शरीर का क्या महत्व है? वस्तुतः ~~कबीर~~ कबीर ने इस शरीर को विनाशी कहा है। उनके अनुसार शरीर का महत्व इतना ही है कि वह ब्रह्म अर्थात् मोक्ष की प्राप्ति हेतु क्रियाकर्मों में सहायक हो सके।

"जो उग्या सो आथवै, फूल्या सो कुमिलाई
जो चिणिया सो ढहि पड़े, जो आया सो जाइ।"

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

(घ) माया :- माया के संदर्भ में कबीर पर शंकर का प्रभाव दर्शनीय है। अद्वैतवादियों के विपरीत कबीर ने माया को ब्रह्म की सृजन शक्ति न मानकर 'महाठगिनी' बताया है जो कि अपने 'त्रिगुणी फांस' के द्वारा मनुष्य को फंसाकर उसे अपने पथ से च्युत कर देती है।

"माया मुई न मन मुआ, मरि मरि गया सरीर
आसा तृष्णा न मुई, यों कहि गया कबीर"

(ङ) साधना मार्ग :- कबीर ने शंकर से निर्गुण ब्रह्म का विचार लेते हुए भी ज्ञान मार्ग की नीरसता समझकर उसे नहीं अपनाया है वे अपने ब्रह्म की प्राप्ति हेतु भक्ति भावना पर जोर देते हैं।

'निरगुन राम जपहुँ रे भाई'

इस प्रकार कबीर के व्यक्तित्व के अनुरूप उनका दर्शन भी बहुआयामी है। अपनी अनुभूतियों के बल पर वे न केवल विभिन्न दर्शनों का मिश्रण करने में सफल रहे हैं बल्कि परस्पर विरोधी तत्वों (इस्लाम व हिंदू) को भी अपने दर्शन में समाहित कर लेते हैं।

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) 'सूर को उपमा देने की झक सी चढ़ जाती है और वे उपमा पर उपमा, उत्प्रेक्षा पर उत्प्रेक्षा कहते चले जाते हैं।'- इस कथन को ध्यान में रखते हुए सूरदास की अलंकार-योजना पर विचार कीजिये। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

सूरदास की कविता के अलंकार पक्ष पर विचार करने पर हम पाते हैं कि एक ओर तो उनकी कविता में अलंकारों की छटा दर्शनीय है तो दूसरी ओर शुक्ल जी ने उनकी अलंकार योजना की कुछ कमियों का भी उल्लेख किया है।

यदि उपलब्धियों की बात करें तो सूरदास के काव्य में शब्दालंकारों की बजाय अर्थालंकारों का प्रयोग अधिक दिखाई पड़ता है क्योंकि सूरदास प्रेम व भावना के कवि हैं और भावनाओं की अभिव्यक्ति हेतु अभिधात्मक सपाट कथन उन्हें उचित प्रतीत नहीं होते। कुछ उदाहरण निम्न है-

"लोचन जल कागद मसि मिलि के (यमक)
ह्वै गई स्याम स्याम की पाति।"

- "आयो घोष बड़ो व्यापारी (रूपक व
लादि खेप ज्ञान गुन जोग की, सांग रूपक)
ब्रज में आन उतारी"

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

परंतु कुछ आलोचकों ने ~~शुक्ल जी~~ सूर की अलंकार योजना पर सवाल खड़े किये हैं। प्रश्न में उपस्थित कथन शुक्ल जी का है जो सूर के काव्य की अलंकार योजना की कमियों को उजागर करता है।

प्रश्न यह है कि सूर को ऐसी ~~छूट~~ क्यों चढ़ती है। काव्य में वर्णन के तीन पक्ष होते हैं- भाव एवं विभाव। भाव पक्ष के रूप में सूर केवल प्रेम व वात्सल्य के कवि हैं। विभाव ~~मे~~ आलंबन विभाव के रूप में कृष्ण, राधा, गोपियाँ व गौणतः यशोदा, नंद, उद्धव आदि हैं। उद्दीपन विभाव के रूप में ब्रज के आस-पास का वातावरण है। अतः विषयगत विस्तार के अभाव में अप्रस्तुत विधान का सहारा लेकर ही रचना की जा सकती है। चूंकि सूर ने ~~एक~~ लाख से अधिक पद रचे हैं अतः!

कुछ कमियाँ द्रष्टव्य हैं-

(क) <u>मर्यादा या परिमिति का विचार नहीं</u>:- कई बार शिल्पगत चमत्कार के चक्कर में ऐसी उपमा या तुलना कर देते हैं जिनमें परमिति का असंतुलन दिखाई पड़ता है-

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

"हरि कर राजत माखन रोटी
जैसे वराह भूधर सह पृथिवी, हरि दसनन की कोटि"

(ख) कई बार चमत्कार पक्ष हावी हो जाने से यांत्रिक कल्पनाएँ हो जाती है, जिससे संवेदना एवं भावना पक्ष में बाधा पड़ती है।

"मन सखत को बेनु लियौ कर, मृग उडुपति वाकिन चरे,
अति आतुर ह्वै सिंहलिख्यौ कर, जो यह भामिनी हरे।"

(ग) तीसरे कई बार एक ही उपमा का प्रयोग अनेक पदों में दिखलाई पड़ता है जैसे -
"जैसे फिरयौ बोहितके खग ज्यौं, पुनि करि हरि पै आयौ"
"जैसे उड़ जहाज को पंछी, पुनि जहाज पै आवै"

इस प्रकार विभाव पक्ष की सीमितता, पदों की बहुलता के कारण अलंकार योजना में कुछ कमियाँ विद्यमान है। सूर के अंधे होने के कारण उन्हें अपने काव्य में काँट-छाँट करने या हरताल करने का मौका भी नहीं मिला। अतः कुल मिलाकर यह अलंकार योजना अत्यन्त सुंदर है।

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

Section–B

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

5. निम्नलिखित गद्यांशों की लगभग 150 शब्दों में सप्रसंग व्याख्या कीजिये: $10 \times 5 = 50$

(क) लेकिन जैसे ही ख़बर शहर में पहुँची, वहाँ से मंत्रियों, नेताओं और अख़बारनवीसों की गाड़ियों का ताँता लग गया। आग से उठने वाले धुएँ के बादल तो एक ही दिन में छँट गए, पर शहरी गाड़ियों से उठनेवाली धूल के बादल कई दिन तक मँडराते रहे। नेताओं ने गीली आँखों और रुँधे हुए गले से क्षोभ प्रकट किया और बड़े-बड़े आश्वासन दिए। अख़बारनवीस आए तो दनादन उस राख के ढेर की ही फोटो खींचकर ले गए। दूसरे दिन अख़बार में छापकर घर-घर पहुँचा भी दिया–इस घटना का सचित्र ब्यौरा। किसी ने सवेरे खुमारी में अँगड़ाई लेते हुए, तो किसी ने चाय की चुस्की के साथ पढ़ा, देखा। देखते ही चेहरे पर विषाद की गहरी छाया पुत गई। चाय का घूँट भी कड़वा हो गया शायद। ढेर सारी सहानुभूति और दुख में लिपटकर निकला–'ओह, हॉरिबल...सिम्पली इनह्यूमन! कब तक यह सब और चलता रहेगा? त्...त्...त्!' और पन्ना पलट गया। थोड़ी देर बाद गाँववालों की ज़िंदगियों की तरह ही अख़बार भी रद्दी के ढेर में जा पड़ा।

सन्दर्भ व प्रसंग :- प्रस्तुत पंक्तियाँ आधुनिक काल में नवलेखन के युग की प्रमुख रचनाकार 'मन्नू भंडारी' के प्रसिद्ध उपन्यास 'महाभोज' से ली गई हैं। भंडारी जी ने इन पंक्तियों के माध्यम से दलितों के घरों के जलाने की घटना पर होने वाली राजनीति व बुद्धिजीवियों की भूमिका का वर्णन किया है।

व्याख्या :- मन्नू भंडारी ने समकालीन समय की राजनीतिक व्यवस्था व मीडिया की संवेदनहीनता पर कटाक्ष करते हुए कहा है कि ऊँची जातियों द्वारा दलितों के घर जलाये जाने के बाद भी इस घटना पर उचित एक्शन लेने

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

के बजाय राजनीतिज्ञों ने इसे भी चुनावी लाभ लेने का साधन समझा। मीडिया व अखबार वालों ने भी इस घटना पर आवाज उठाने के बजाय केवल अखबार बिक्री को बढ़ाने का माध्यम समझा। मध्य वर्गीय बुद्धिजीवी जिनसे समाज में परिवर्तन लाने की अपेक्षा की जाती है, ने भी केवल घटना पर क्षोभ व्यक्त किया और अखबार को रद्दी में फेंक दिया।

प्रासंगिकता :- परिस्थितियों में मध्यवर्गीय बुद्धिजीवी वर्ग की संवेदनहीनता उसी प्रकार उभर कर है जैसे मुक्तिबोध ने 'अंधेरे में' कविता में।

→ राजनीतिक घटनाओं को पर्दाफाश करने में तो यह उपन्यास आज भी प्रासंगिक दिखलाई पड़ता है।

→ दलितों पर अत्याचारों की समस्या आज भी विद्यमान है और इन घटनाओं के निवारण के बजाय केवल राजनीति की जाती है।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(घ) देखो विद्या का सूर्य पश्चिम से उदय हुआ चला आता है। अब सोने का समय नहीं है। अँगरेज का राज्य पाकर भी न जगे तो कब जागोगे। मूर्खों के प्रचंड शासन के दिन गए, अब राजा ने प्रजा स्वत्व पहिचाना। विद्या की चरचा फैल चली, सबको सब कुछ कहने-सुनने का अधिकार मिला, देश-विदेश से नई-नई विद्या और कारीगरी आई। तुमको उस पर भी वही सीधी बातें, भाँग के गोले, ग्रामगीत, वही बाल्यविवाह, भूत-प्रेत की पूजा, जन्मपत्री की विधि! वही थोड़े में संतोष, गप हाँकने में प्रीति और सत्यानाशी चालें! हाय अब भी भारत की यह दुर्दशा!

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

प्रस्तुत पंक्तियाँ 'भारतेन्दु हरिश्चन्द्र' के नवजागरण कालीन प्रसिद्ध नाटक 'भारत-दुर्दशा' से ली गई हैं। भारतेन्दु ने पाश्चात्य ज्ञान की प्रशंसा व भारतीय अंधविश्वासों, उदासीनता एवं संतोषी प्रवृत्ति की आलोचना इन पंक्तियों में की है।

व्याख्या : भारतेन्दु के अनुसार अंग्रेजों के भारत आगमन के कारण प्राचीन रूढ़ीवादी एवं अज्ञानी शासकों का अंत हुआ व आधुनिक शिक्षा से युक्त साम्राज्य की स्थापना हुई है। वस्तुतः भारतेन्दु आधुनिक शिक्षा को भारतीय विकास का प्रमुख मार्ग समझते हैं ताकि भारत में कल-कारखानों का विकास कर उन्नति कर सके। परन्तु भारत के लोग इस विद्या का ज्ञान नहीं उठा रहे हैं। वे

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

अब भी धार्मिक रूढ़ियों, अंधविश्वासों एवं अज्ञानता, संतोष के जाल में जकड़े हुए हैं। नशा, मदिरा, आलस्य, झूठ, संतोष आदि दशाओं के कारण भारतीयों की प्रगति बाधित हो रही है और भारत जैसे गौरवपूर्ण देश इस दुर्दशा में जाने को अभिशप्त है।

विशेष :- राजभक्ति व राष्ट्रभक्ति का द्वन्द्व दिखता है परंतु भारतेन्दु ने केवल कुछ प्रसंगों में ही अंग्रेजों की तारीफ की है, वह भी कुछ कारणों से।

- भारतेन्दु ने दुर्दशा के कारण भी देश के भीतर खोजे हैं। अपनी असफलता का ठीकरा दूसरों के सर नहीं फोड़ा है।

→ "जानी सकै सब कुछ सबही, विविध कला के भेद, बनै वस्तु कल की इतै, मिटत दीनता खेद"

इस कविता में भी भारतेन्दु का यही मत उजागर होता है।

- खड़ी बोली की स्थापना का अच्छा प्रयास किया गया है।

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

8. (क) मोहन राकेश का लक्ष्य हिन्दी में मौलिक रंगमंच की स्थापना का था। अपने नाटक 'आषाढ़ का एक दिन' में वे अपने इस लक्ष्य की प्राप्ति में कहाँ तक सफल हो सके हैं? 20

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

मोहन राकेश नवलेखन के दौर के रचनाकार हैं। राकेश के सामने सबसे बड़ी चुनौती थी - हिंदी के एक मौलिक रंगमंच को स्थापित करने की। आषाढ़ का एक दिन की भूमिका में उन्होंने लिखा भी है -

"हिंदी रंगमंच की दृष्टि से, पाश्चात्य रंगमंच की उपलब्धियाँ ही हमारे सामने हैं। परन्तु न तो हमारा जीवन उन उपलब्धियों की माँग करता है न ही यह सब उन विशेषताओं को ज्यों का त्यों हमारे यहाँ स्थापित कर दें"

राकेश के अनुसार रंगमंच की के विकास से तात्पर्य यह कदापि नहीं है कि "राजकीय या अर्द्धराजकीय संरक्षण से रंगशालाएँ जहाँ तहाँ स्थापित कर दी जायें"। वे चाहते थे कि हिंदी रंगमंच भारतीय जनता की आकांक्षाओं एवं मान्यताओं का प्रतिनिधित्व करे।

इस समस्या हेतु राकेश ने जो रंगमंच दृष्टि सुझाई है, वह पाश्चात्य रंगमंच

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

की भाँति अति द्रव्य प्रयोग पर आधारित न होकर 'मानव तत्व' व 'शब्द तत्व' पर आधारित है। मानव तत्व से अभिप्राय अभिनय सामर्थ्य से है तो 'शब्द तत्व' का अभिप्राय ध्वनियों के सार्थक प्रयोग से है। उनका मत है कि इन तत्वों के प्रयोग द्वारा 'कम से कम संसाधनों द्वारा संश्लिष्ट से संश्लिष्ट प्रयोग' किये जा सकें।

'आषाढ़ का एक दिन' नाटक पर विचार करें तो हम पाते हैं कि रविश ने अपनी संपूर्ण रंगमंचीय दृष्टि इस नाटक के माध्यम से स्थापित कर दी है। उन्होंने नाटक के अंत में लिखा भी है कि 'उम्मीद है कि यह नाटक उन (रंगमंचीय) संभावनाओं में कुछ योगदान दे सके।"

सर्वप्रथम इस नाटक में अंक योजना पर विचार करें तो हम पाते हैं कि नाटक में केवल तीन अंक है परन्तु दृश्य केवल एक ही है। वह दृश्य भी अपने

कृपया इस स्थान कुछ न लिखें।
(Please don't w anything in this

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

आप में जटिल न होकर अत्यन्त सरल है। दो दीपक, एक पलंग, चौकी, कुछ कपड़े व पर्दों से इसका मंचन सरलता से किया जा सकता है। राकेश चाहते तो नाटक के दूसरे या तीसरे अंक में उज्जैन या काश्मीर का दरबार दिखा सकते थे परंतु ऐसा करने से रंग योजना न केवल जटिल या मंहगी हो जाती बल्कि यह उनकी प्रतिज्ञा के भी विपरीत होता।

दूसरे मानव तत्व एवं शब्द तत्व की बात करें तो राकेश ने अपने नाटक में रंगसंकेत पर्याप्त मात्रा में दिए हैं कहीं-कहीं तो रंगसंकेत संवादों से भी अधिक हो गये हैं। इन संकेतों द्वारा निर्देशन में तो आसानी होती ही है, अभिनेता को भी भावनाओं के अनुरूप अभिनय करने का पूरा मौका मिलता है।

शब्द तत्व की दृष्टि से राकेश ने ध्वनि योजना का जो ज़बरदस्त प्रयोग

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

किया है, वह अद्भुतपूर्व है। पात्रों के 'मूड' के अनुसार ध्वनियों में भी परिवर्तन आता है। प्रसंग चाहे मेघों का गर्जन का हो या घोड़ों की टापों की ध्वनियों का - ध्वनियों के सार्थक प्रयोग ने अनुपस्थित पात्र को न केवल उपस्थित किया है बल्कि दर्शकों को भी बिना कुछ कहे नाटक के भावार्थ को समझने में आसानी हुई है।

इस प्रकार 'आषाढ़ का एक दिन' नाटक के माध्यम से रविंद्र ने हिंदी रंगमंच के विकास में एक क्रान्तिकारी की भूमिका का निर्वहन किया है। बिना पाश्चात्य तत्वों के समावेश के केवल हिंदी भाषी प्रदेश के लोगों की मान्यताओं व अपेक्षाओं के अनुरूप यह रंगमंचीय प्रयोग सचमुच प्रशंसनीय है।

कृपया इस स्था
कुछ न लिखें।
(Please don't w
anything in thi

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) 'स्कंदगुप्त' नाटक के नामकरण की उपयुक्तता पर विचार कीजिये। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

जयशंकर प्रसाद आधुनिक युग के नाटककार हैं। प्रसाद के नाटक उनकी छायावादी दृष्टि से प्रेरित होकर एक ओर तो नवजागरण प्रेरित राष्ट्रीयता की प्रेरणा देते हैं तो दूसरी ओर अपने समय के व्यक्तिवाद के साथ-साथ साहित्य में स्वच्छंदतावाद का प्रभाव भी उनके नाटकों में नज़र आता है।

~~प्रसाद~~ नाटकों के नामकरण पर विचार करें तो उचित नाम वही होता है जो रचना के प्रतिपाद्य को सम्पूर्ण रूप में व्यक्त कर सके। यह नाम स्थिति मूलक भी हो सकता है जैसे- भारत दुर्दशा, घटना प्रधान भी जैसे - गोदान या चरित्रप्रधान भी जैसे - स्कंदगुप्त।

प्रसाद को चरित्र-प्रधान नाटक लिखने की प्रेरणा न तो भारतीय नाट्यशास्त्र से प्राप्त हुई न ही पश्चिमी परंपरा से। यदि 'स्कंदगुप्त' नाटक के नामकरण पर विचार करें तो प्रसाद के तीन उद्देश्य दिखलाई पड़ते हैं-

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(क) प्रसाद इस नाटक के माध्यम से भारतीय जनता में नवजागरण चेतना व राष्ट्रीयता की भावना जगाना चाहते थे। इस हेतु उन्हें स्कंधगुप्त नाम उपयुक्त लगा क्यों कि ऐतिहासिक पात्र के रूप में स्कंध ने हूणों से आर्यावर्त्त की रक्षा की थी। अतः यह पात्र राष्ट्रीयता का प्रतीक था।

(ख) प्रसाद का दौर 'स्वच्छंदतावाद' का दौर था। इस समय में समाज में 'व्यक्तिवाद' अपने चरम में था। चरित्र प्रधान नाटकों के परंपरा न मिलते हुए भी प्रसाद ने विभिन्न नाट्य शैलियों के मिश्रण से जटिल चरित्रों का निर्माण कर नाटक लिखे। चूँकि इस नाटक में स्कंधगुप्त ही ऐसा चरित्र है जिसमें नायकत्व का औदात्य, वीरता, भद्रता के साथ विचलन भी विद्यमान है अतः नाटक का नामकरण भी यही हो सकता है।

(ग) तीसरा प्रसाद अपने दर्शन को भी नाटकों में प्रक्षेपित करते हैं। चूँकि स्कंध व देवसेना

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

दो ही ऐसे चरित्र है जिसमें प्रसाद यह कार्य कर पाये हैं अतः इस कारण से भी यह नामकरण उचित है।

प्रश्न है कि यदि प्रसाद यह नाम न रखते तो क्या रखते? यदि 'देवसेना' रखते तो अध्यात्मिकता व आनंदवाद का दर्शन तो स्थापित हो जाता परंतु राष्ट्रीयता न आ पाती। 'हुणों की पराजय' नामकरण रखते तो दर्शन व राष्ट्रीयता के दोनों उद्देश्य ही विफल हो जाते।

अतः उपर्युक्त तीनों संदर्भों को देखते हुए 'स्कंधगुप्त' नामकरण ही, राष्ट्रीयता की भावना, चारित्रिक संश्लेषण व आनंदवाद के दर्शन की स्थापना के प्रसाद के उद्देश्यों में सफल होता है। साथ ही यही वह चरित्र है जो रचना पढ़ने या देखने पर पाठक/दर्शक के मन को आलोड़ित-स्पंदित करता है।

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) 'भारत-दुर्दशा' नाटक की अभिनेयता पर प्रकाश डालिये। 15

किसी भी नाटक की अभिनेयता पर विचार करने हेतु हमें यह जानना चाहिये नाटककार की रंगमंच के प्रति दृष्टि क्या है? जहाँ प्रसाद के नाटक सुरुचि-सम्पन्न अभिजात्य वर्ग के लिये थे तो भारतेन्दु ने अपने नाटक जनसामान्य हेतु लिखे थे ताकि उनमें नवजागरण चेतना का विकास कर उनकी जड़ता को झकझोरा जा सके। इसी कारण न केवल उन्होंने नाटक लिखे बल्कि अभिनय भी किया।

अभिनेयता के तत्व

(क) रंगमंच प्रयोग :- भारतेन्दु का नाटक 'भारत-दुर्दशा' में 6 अंक व 6 ही दृश्य हैं। वस्तुतः ये दृश्य जटिल न होकर सरल हैं। कुछ कुर्सियों, फौज के डेरे हुए तंबुओं के साथ कुछ पर्दों के साथ लगभग सभी दृश्य रंगमंच पर खेले जा सकते हैं।

(ख) रंगमंचीय संकेत :- भारतेन्दु के युग में

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

नाटकों में रंगमंचीय संकेतों का देने की परंपरा नहीं थी। परंतु, यह तो भारतेन्दु की कल्पनाशीलता का प्रमाण है कि उन्होंने कुछ स्थानों पर ये संकेत भी दिये हैं -

आलस्य - "मोटा आदमी जम्हाई लेता हुआ धीरे धीरे आता है"

"अंधकार - गीत गाता हुआ स्खलित नृत्य करता है"

(ग) ध्वनि प्रयोग - यद्यपि भारतेन्दु के युग में ध्वनियों के प्रयोग की परंपरा नहीं थी, पर एक-दो जगह उन्होंने यह कार्य भी किया है।

अंधकार के आगमन के समय — "आंधी आने की भाँमि शब्द सुनाई देती है।"

इसी प्रकार प्रकाश व्यवस्था के संदर्भ में भारतेन्दु ने अनूठा प्रयोग करते हुए नाटक की प्रकाश व्यवस्था में परिवर्तन करने का साहस दिखाया है। जैसे - अंधकार के आगमन के समय -

'रंगशाला के दीपों में से अनेक बुझा दिये जायेंगे।'

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(घ) गीतों का प्रयोग :- पारसी रंगमंच की परंपरा से प्रभावित गीतों का प्रयोग इस नाटक को कुछ बनाते हैं। कई - कई गीत तो अत्यन्त लंबे हैं (जैसे भारत - भाग्य गीत) परंतु नाटक के कुछ अंको में व्यंग्यात्मक गीत दर्शक को बांध लेते हैं-

"मदवा पीले पागल, जीवन बीत्यौ जात
बिनु मद जगत सार कुछु नाहिं, मान हमारी बात"

(ङ) भाषा :- हास्य व्यंग्य का खूब प्रयोग किया गया है। कुछ लंबे एकालाप हैं जो नाटक के तनाव को क्षरित करते हैं। कुल मिलाकर चौथे व तीसरे अंक के संवादों में चुस्तता है और व्यंग्यों का प्रयोग इन्हें चुटीला बनाता है।

इस प्रकार रंगमंचीयता की दृष्टि से नाटक को सफल करार दिया जा सकता है। भारतेन्दु के समय में ही इसे लखनऊ, बनारस आदि स्थानों पर मंचित किया जा चुका था। निर्देशकों को कुछ स्वतंत्रता देकर नाटक की आत्मा को सुरक्षित रख, गीतों में काट-छाँट कर इसका मंचन आज भी संभव है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation